बंगाल में द्वैध शासन

शक्ति कुमार

अपनी दूसरी गवर्नरी में क्लाइव ने भारत में अंग्रेजी प्रशासन की नींव को सुदृढ़ करने का प्रयास किया। इसके लिए उसने भारतीय शक्तियों के साथ संधियाँ कीं, कम्पनी में सुधार लाया तथा दोहरी प्रशासनिक योजना तैयार की, जिसे 'द्वैध शासन' के नाम से भी जाना जाता है।

क्लाइव की दूसरी गवर्नरी के समय मीर कासिम तथा मीर जाफर का नामोनिशाँ नहीं था और नवाब नजमुद्दौला बंगाल की गद्दी पर प्रतिष्ठापित था। क्लाइव ने मुगल बादशाह से फरमान द्वारा कम्पनी के लिए बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी ले ली थी। फरवरी, 1765 ई० में कम्पनी निजामत का अधिकार (प्रान्त की सुरक्षा) भी ले चुकी थी। इस प्रकार दीवानी और निजामत दोनों ही कम्पनी के पास आ गये थे। दीवानी का अर्थ था, राजस्व वसूलने का अधिकार। दूसरे अर्थो में अंग्रेज कम्पनी इन सूबों के लिए मुगल बादशाह की ओर से दीवान बन गई और इन सूबों से लगान वसूल करने तथा असैनिक न्याय की देखभाल करने का उसे अधिकार प्राप्त हो गया। क्लाइव ने इस द्वैध शासन के लिए व्यावहारिक व्यवस्था भी की। क्लाइव ने दो दीवान नियुक्त किये। बंगाल के लिए मुहम्मद रजा खाँ और बिहार के लिए पहले राजा धौरज नारायण, फिर दो वर्ष के बाद राजा सिताबराय को नियुक्त किया। राजस्व वसूलने का समस्त कार्य इन नायक दीवानों को था। वे एक निर्धारित राशि कम्पनी के कोष में जमा कराने के लिए उत्तरदायी होते थे।

बंगाल के शासक के रूप में कम्पनी के विभिन्न हित प्रत्यक्ष रूप से विरोधी दिशाओं में कार्य कर रहे हैं और वे एक–दूसरे के लिए घातक सिद्ध हो रहे हैं। अतः किसी अन्य नवीन व्यवस्था के बिना दशा अवश्य ही बिगड़ती जायेगी। यदि कम्पनी को अपनी वर्तमान प्रणाली के अनुसार कार्य करने दिया गया तो वह अपना विनाश स्वयं कर लेगी।